अंजू केशव

दुनिया कहे जिसको कि ये नादान सा क्यों है
हमको लगे वो आदमी इंसान सा क्यों है

आता है ख़ुशी ले के मगर तू न ठहरता
ऐ चैन! बता दिल में तू मेहमान सा क्यों है

जन्नत से नदी लाने की क़ुव्वत है तुझी में
मुश्किल पे फिर इंसान तू हलकान सा क्यों है

पल भर की घटाएँ है बरस जाएँगी पल में
सूरज! ये बता इतना तू बेजान सा क्यों है

चंदा ने छिपाया है सरे शाम से सूरज
वरना वो फ़लक पे बना दरबान सा क्यों है

है मौत ही जीवन का नतीजा ये पता है
साँसों के लिए फिर यूँ घमासान सा क्यों है

जो सिर्फ तजुर्बे थे मेरी ज़िंदगी के कुछ
दुनिया को लगे वो मेरा दीवान सा क्यों है

सब कह रहें है ज़हर इसे और जी रहे
हसरत से ज़िंदगी को सभी लोग पी रहे

अच्छा रहे तो ठीक है वरना न ही रहे
सबसे नहीं ज़रूरी कि रिश्ता कोई रहे

किस काम की है वो ख़ुशी बतलाइये ज़रा
जिसको सँभालने में ही ये मन दुखी रहे

आया है कल किसी की कभी ज़िंदगी में क्या
पर आस है कि कल से हमारी लगी रहे

बिखरे नहीं न भटके कभी अपनी राह से
हैं इसलिए किनारे कि बहती नदी रहे

करते हैं बात प्यार से भरने की सब मगर
तलवार से ही लोग यहाँ ज़ख़्म सी रहे

ISSN:2583-8849